२५३. यह रसूल हैं, जिन में से हम ने कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत दी है उन में से कुछ हैं जिन से अल्लाह (तआला) ने बात की है और कुछ का मर्तबा ऊंचा किया है और हम ने ईसा पुत्र मरियम को मोजिज़ा अता किया और पाक रूह से उनका समर्थन कराया,[1] अगर अल्लाह चाहता तो उन के बाद वाले अपने पास निशानियाँ आ जाने के बाद आपस में कभी भी लड़ाई-भिड़ाई न करते, लेकिन उन लोगों ने इख़्तिलाफ़ किया, उन में से कुछ ने ईमान क़ुबूल किया और कुछ काफ़िर हुए, और अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो यह आपस में न लड़ते लेकिन अल्लाह (तआला) जो चाहता है, करता है।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ
مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ۭ
وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ
بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ
الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْهُمُ
الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ
وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۣ
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ (253)

२५४. हे ईमानवालो ! जो हम ने तुम्हें दे रखा है, उस में से ख़र्च करते रहो, इस से पहले कि वह दिन आये जिस दिन न तिजारत है न दोस्ती और न सिफ़ारिश, और काफ़िर ही ज़ालिम हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا
شَفَاعَةٌ ۭ وَالْكٰفِرُوْنَ ھُمُ الظّٰلِمُوْنَ (254)

२५५. अल्लाह (तआला) ही सच्चा माबूद है, जिस के सिवाये कोई माबूद नहीं, जो ज़िन्दा है, और सबका थामने वाला है, जिसे न ऊंघ आये न नींद उस की मिल्कियत में ज़मीन व आसमान की सभी चीज़ें हैं, कौन है जो उस के हुक्म के बिना उस के सामने सिफ़ारिश कर सके, वह जानता है जो उन के सामने हैं, जो उन के पीछे हैं और वह उस के इल्म में से किसी चीज़ का घेरा नही कर सकते, लेकिन वह जितना चाहे ![2] उसकी कुर्सी की वुसअत ने ज़मीन व आसमान को घेर रखा है, वह अल्लाह (तआला) उनकी

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا ھُوَ ۚ اَلْـحَيُّ الْقَيُّوْمُ ڬ لَا تَاْخُذُهٗ
سِـنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۭ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ۭ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَھُمْ ۚ
وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَاۗءَ ۚ
وَسِعَ كُرْسِـيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـــــُٔـوْدُهٗ
حِفْظُهُمَا ۚ وَھُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ (255)

---

[1] मतलब वह मोजिज़ा है, जो हज़रत ईसा को अता किये गये थे, जैसे मरे हुए को जिलाना आदि जिसकी तफ़सील सूर: आले इमरान में आयेगी, पाक रूह से मुराद जिब्रील है, जैसाकि पहले भी गुज़र चुका है।

[2] यह आयतुल कुर्सी है। सहीह हदीसों में इसका बहुत महत्व (फ़ज़ीलत) बयान किया गया है, जैसे यह क़ुरआन की सब से अज़ीम आयत है, इसको रात को पढ़ने से शैतान से महफ़ूज़ रहता है, इस को हर नमाज़ के बाद पढ़ना चाहिए। (इब्ने कसीर)

हिफ़ाज़त से न थकता है और न ऊबता है, वह तो बहुत महान और बहुत बड़ा है।

لَآ إِكْرَاهَ فِى ٱلدِّينِ ۖ قَد تَّبَيَّنَ ٱلرُّشْدُ مِنَ ٱلْغَىِّ ۚ فَمَن يَكْفُرْ بِٱلطَّٰغُوتِ وَيُؤْمِنۢ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱسْتَمْسَكَ بِٱلْعُرْوَةِ ٱلْوُثْقَىٰ لَا ٱنفِصَامَ لَهَا ۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿256﴾

२५६. दीन के बारे में कोई दबाव नहीं, सच-झूठ से अलग हो गया, इसलिये जो इंसान तागूत (अल्लाह तआला के सिवाय दूसरे देवों) को नकार कर अल्लाह (तआला) पर ईमान लाये, उस ने मज़बूत कड़े को थाम लिया, जो कभी भी न टूटेगा और अल्लाह (तआला) सुनने वाला, जानने वाला है।

ٱللَّهُ وَلِىُّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ يُخْرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ ۖ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ أَوْلِيَآؤُهُمُ ٱلطَّٰغُوتُ يُخْرِجُونَهُم مِّنَ ٱلنُّورِ إِلَى ٱلظُّلُمَٰتِ ۗ أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿257﴾

२५७. ईमानवालों का संरक्षक (वली) अल्लाह तआला ख़ुद है, वह उन्हें अंधेरे से रोशनी की ओर निकाल ले जाता है, और काफ़िरों के दोस्त शैतान हैं, वह उन्हें रौशनी से अंधेरे की तरफ़ ले जाते हैं, यह लोग जहन्नमी हैं, जो हमेशा उसी में पड़े रहेंगे।

أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلَّذِى حَآجَّ إِبْرَٰهِۦمَ فِى رَبِّهِۦٓ أَنْ ءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ ٱلْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَٰهِۦمُ رَبِّىَ ٱلَّذِى يُحْىِۦ وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا۠ أُحْىِۦ وَأُمِيتُ ۖ قَالَ إِبْرَٰهِۦمُ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَأْتِى بِٱلشَّمْسِ مِنَ ٱلْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ ٱلْمَغْرِبِ فَبُهِتَ ٱلَّذِى كَفَرَ ۗ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿258﴾

२५८. क्या तूने उसे नहीं देखा, जिस ने मुल्क पाकर इब्राहीम (عليه السلام) से उस के पालनहार के बारे में झगड़ा किया जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब तो वह है जो जिन्दा करता और मारता है, वह कहने लगा, मैं भी जिलाता और मारता हूँ, इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा अल्लाह (तआला) सूरज को पूरब की ओर से ले आता है, तू उसे पश्चिम से ले आ, अब वह काफ़िर भौंचक्का रह गया और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता।

कुर्सी से कुछ ने पैर रखने की जगह, कुछ ने ताक़त, कुछ ने मुल्क, और कुछ ने अर्श मतलब लिया है, लेकिन अल्लाह तआला की सिफ़ात और फ़ज़ीलतों के बारे में मोहद्दिसीन (हदीस के आलिम) और बुज़ुर्गों की यही राय है कि अल्लाह तआला की जो सिफ़त, जिस तरह से क़ुरआन और हदीस में बयान है, उनको बिना किसी तर्क-वितर्क के उन पर ईमान रखा जाये, इसलिए यही ईमान रखना चाहिए कि हक़ीक़त में कुर्सी है जो अर्श से अलग है, यह किस तरह की है, इस पर वह किस तरह बैठता है? इसका बयान हम नहीं कर सकते क्योंकि इसकी कैफ़ियत और हक़ीक़त के बारे में हमें इल्म नहीं है।

२५९. या उस इंसान के समान जिसका गुज़र उस बस्ती पर हुआ, जो छत के बल औंधी पड़ी हुई थी, कहने लगा उसकी मौत के बाद अल्लाह (तआला) उसे किस तरह जिन्दा करेगा तो अल्लाह (तआला) ने उसे सौ साल के लिये मार दिया, फिर उसे (जिन्दा) उठाया, पूछा! "कितनी मुद्दत तुझ पर गुजरी?" जवाब दिया कि "एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा।"[1] कहा कि "तू बल्कि सौ साल तक रहा, फिर अब तू अपने खाने-पीने को देख कि बिल्कुल ख़राब नहीं हुआ और अपने गधे को भी देख, हम तुझे लोगों के लिये निशानी बनाते हैं, तू देख कि हम हड्डियों को किस तरह खड़ी करते हैं, फिर उन पर गोश्त चढ़ाते हैं।" जब यह सब वाज़ेह हो चुका, तो कहने लगा, "मैं जानता हूँ कि अल्लाह (तआला) सब कुछ जानने वाला है।"[2]

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَىٰ قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحْيِي هَٰذِهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۖ فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۖ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَل لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانظُرْ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ وَانظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِّلنَّاسِ ۖ وَانظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿259﴾

२६०. और जब इब्राहीम (ﷺ) ने कहा, "हे मेरे रब! मुझे दिखा कि तू मुर्दों को किस तरह जिन्दा करेगा?" अल्लाह (तआला) ने कहा "क्या तुम्हें ईमान नहीं?" जवाब दिया, "ईमान तो है, लेकिन मेरे दिल को इत्मेनान हो जायेगा।" कहा, "चार परिन्दे लो, उन के टुकड़े कर डालो, फिर हर पहाड़ पर उनका एक-एक हिस्सा रख दो, फिर उन्हें पुकारो तुम्हारे पास दौड़ते हुए आ जायेंगे" और जान रखो कि अल्लाह (तआला) ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۖ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِن ۖ قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿260﴾

---

[1] कहा जाता है कि जब वह इंसान मरा था तो थोड़ा दिन चढ़ा था, और जब वह जिन्दा हुआ तो भी शाम नहीं हुई थी तो उस ने हिसाब लगाया था कि अगर मैं कल आया था, तो एक दिन बीता या दिन का कुछ हिस्सा गुज़रा है जबकि हक़ीक़त यह है कि इस के इस वाक़िआ की मुद्दत सौ साल की थी।

[2] यानी यक़ीन तो मुझे पहले भी था, लेकिन अब आँखों से देखकर यक़ीन और इल्म में और मज़बूती आ गयी है।

मَثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ لِمَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿261﴾

२६१. जो लोग अल्लाह (तआला) की राह में अपना माल ख़र्च करते हैं, उनकी मिसाल उस दाने जैसी है, जिस में से सात बालियाँ निकलें और हर बाली में सौ दाने हों, और अल्लाह (तआला) जिसे चाहे कई गुना दे और अल्लाह (तआला) बड़ा कुशादा और इल्म वाला है।

الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنفَقُوا مَنًّا وَلَا أَذًى ۙ لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿262﴾

२६२. जो लोग अपना माल अल्लाह (तआला) की राह में ख़र्च करते हैं, फिर उसके बाद एहसान नहीं जताते और न तकलीफ़ देते हों[1] उनका फल उन के रब के पास है, उन पर न तो कोई डर है न वह उदास होंगे।

قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّن صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا أَذًى ۗ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ﴿263﴾

२६३. भली बात कहना और माफ़ करना उस सदक़ा से बेहतर है, जिस के बाद दुख दिया जाये और अल्लाह बेनियाज़ और सहनशील है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا صَدَقَاتِكُم بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي يُنفِقُ مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا ۖ لَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿264﴾

२६४. हे ईमानवालो! अपने सदक़ा को एहसान जताकर और दुख पहुँचाकर बेकार न करो, जिस तरह से वह इंसान जो अपना माल दिखावे के लिये ख़र्च करे और न अल्लाह (तआला) पर ईमान रखे और न क़यामत पर, उसकी मिसाल उस चिकने पत्थर की है, जिस पर थोड़ी सी मिट्टी हो, फिर उस पर ज़ोरदार बारिश हो और वह उसे बिल्कुल साफ़ और सख़्त छोड़ दे,[2] इन रियाकारों

---

[1] अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने की फ़ज़ीलत का जो बयान गुज़र चुका है, केवल उस इंसान को हासिल हो सकेगा, जो माल ख़र्च करने के बाद एहसान न जतायें, और मुँह से ऐसे लफ़्ज़ न कहें जिससे किसी ग़रीब के सम्मान को ठेस पहुँचे और उसको तकलीफ़ का एहसास हो, यह इतना बड़ा गुनाह है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया :

"क़यामत के दिन अल्लाह तआला तीन तरह के इंसानों से बात नहीं करेगा उन में एक एहसान जताने वाला है।" (मुस्लिम, किताबुल ईमान)

[2] इस आयत में यह कहा गया है कि, सदक़ा व सवाब करके भलाई करके जताना और दुख देने वाली बातें करना ईमानवालों को ज़ेब नहीं देते, बल्कि उन लोगों की आदत है जो मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) हैं वह देखावे के लिये ख़र्च करते हैं। दूसरे ऐसे ख़र्च करने की मिसाल ऐसी है कि जैसे पत्थर की चट्टान पर मिट्टी जम जाये और कोई उस में बीज बो दे और उस के बाद बारिश का एक झोंका आये, तो सब कुछ बह जाये और वह पत्थर मिट्टी से बिल्कुल साफ़ हो जाये, या जिस तरह वह बारिश उस पत्थर के लिये फ़ायदामंद नहीं हुई उसी तरह दिखावे का दान भी उसको कोई फ़ायदा नहीं पहुँचा सकेगा।

को अपनी कमाई से कोई चीज हाथ नहीं लगती और अल्लाह (तआला) काफ़िरों के समुदाय को हिदायत नहीं देता।

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَثْبِيتًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَآتَتْ أُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ فَإِن لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿265﴾

२६५. उन लोगों की मिसाल जो अपना माल अल्लाह (तआला) की मर्जी हासिल करने के लिए खुशी दिल से और यक़ीन के साथ ख़र्च करते हैं, उस बाग़ जैसी है जो ऊँची धरती पर हो और जोरदार बारिश से अपना फल दुगना लादे और अगर उस पर बारिश न भी हो तो फुहार ही काफ़ी है, और अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमलों को देख रहा है।

أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَن تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَاءُ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿266﴾

२६६. क्या तुम में से कोई भी यह चाहता है कि उस के खजूरों और अंगूरों के बाग़ हों, जिस में नहरें बह रही हों और हर तरह के फल मौजूद हों, उस इंसान का बुढ़ापा आ गया हो, उस के नन्हें-नन्हें बच्चे भी हों और अचानक बाग़ को बगुला लग जाये जिस में आग भी हो जिस से बाग़ जल जाये। इसी तरह अल्लाह (तआला) तुम्हारे लिए निशानियों को बयान करता है, ताकि तुम फ़िक्र कर सको।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنفِقُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ الْأَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنفِقُونَ وَلَسْتُم بِآخِذِيهِ إِلَّا أَن تُغْمِضُوا فِيهِ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿267﴾

२६७. हे ईमानवालो! अपनी हलाल कमाई में से और धरती में से तुम्हारे लिये हमारी निकाली हुई चीजों में से ख़र्च करो। उन में से बुरी चीजों को ख़र्च करने का इरादा न करना जिसे तुम ख़ुद लेने वाले नहीं हो, हाँ! अगर आँखें बन्द कर लो तो,[1] और जान लो अल्लाह (तआला) बेनियाज और हम्द वाला है।

[1] या जिस तरह से तुम ख़ुद बेकार चीजें लेना अच्छा नहीं समझते, उसी तरह अल्लाह की राह में अच्छी चीज ही ख़र्च करो।

२६८. शैतान तुम्हें गरीबी से डराता है, और बेहयाई का हुक्म देता है[1] और अल्लाह (तआला) तुम को अपनी रहमत और फ़ज़्ल का वायेदा करता है। अल्लाह (तआला) बहुत मेहरबान और इल्म वाला है।

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿268﴾

२६९. वह जिसे चाहे इल्म, अक़्ल देता है और जिसे अक़्लमंदी दे दी गई उसे बहुत सारी भलाई दी गई और नसीहत केवल अक़्लमंद ही हासिल करते हैं।

يُّؤْتِى الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِىَ خَيْرًا كَثِيْرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿269﴾

२७०. तुम चाहे जितना ख़र्च करो (या सदक़ा करो) और जो कुछ नज़र मानो[2] उसे अल्लाह (तआला) जानता है और ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं।

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ۗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿270﴾

२७१. अगर तुम दान-पुण्य (सदक़ात) को ज़ाहिर करो, तो वह भी अच्छा है, और अगर तुम उसे छिपा कर गरीबों को दे दो, तो यह तुम्हारे लिये सबसे अच्छा है। अल्लाह (तआला) तुम्हारे गुनाहों को ख़त्म कर देगा और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सभी अमलों से बाख़बर है।

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِىَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۗ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿271﴾

[1] यानी नेक काम में माल ख़र्च करना हो, तो शैतान यह डर पैदा कराता है कि इस से तुम गरीब और भिखारी हो जाओगे, लेकिन बुरे कर्मों में बेकार करने में ऐसे इरादों को क़रीब नहीं आने देता बल्कि उन बुरे कामों को इस तरह बना-सँवार के पेश करता है कि उन के लिए छिपी हुई इच्छायें इस तरह जाग जाती हैं कि उन पर इंसान बड़े से बड़ा माल ख़र्च कर डालता है।

[2] मनौती (नज़र) का मतलब है कि मेरा फ़्लाँ काम हो गया या फ़्लाँ दु:ख का ख़ात्मा हो जायेगा, तो मैं अल्लाह की राह में इतना सदक़ा करूँगा, इस नज़र को पूरा करना ज़रूरी है, अगर किसी नाफ़रमानी और नाजायेज़ काम की नज़र मानी है तो उसे पूरा करना ज़रूरी नहीं है। नज़र भी नमाज़ और रोज़े की तरह इबादत है, इसलिये अल्लाह के सिवाय किसी और की नज़र मानना उसकी इबादत है जो शिर्क है, जैसाकि आजकल मशहूर मज़ारों पर मनौती और चढ़ावे का यह काम आम है, अल्लाह तआला इस शिर्क से बचाये।

२७२. उन्हें हिदायत पर ला खड़ा करना तुम्हारे अधिकार में नहीं, बल्कि हिदायत (मार्गदर्शन) अल्लाह (तआला) देता है जिसे चाहता है, और तुम जो अच्छी चीज अल्लाह की राह में दोगे उसका फ़ायेदा ख़ुद पाओगे, तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह (तआला) की ख़ुशी हासिल (प्राप्त) करने के लिये ख़र्च करना चाहिये, तुम जो कुछ माल ख़र्च करोगे उसका पूरा-पूरा बदला तुम्हें दिया जायेगा और तुम्हारा हक़ (अधिकार) न मारा जायेगा।

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿272﴾

२७३. दान के लायक़ सिर्फ़ वह ग़रीब हैं जो अल्लाह की राह में रोक दिये गये, जो देश में चल-फिर नहीं सकते,[1] बेवक़ूफ़ लोग उनके सवाल न करने की वजह से उन्हें मालदार समझते हैं, आप उन के मुँह को देखकर अलामत से उन्हें पहचान लेंगे, वह लोगों से चिमटकर भीख नहीं माँगते, तुम जो कुछ माल ख़र्च करो अल्लाह (तआला) उसका जानने वाला है।

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ ؗ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿273﴾

२७४. जो लोग अपने माल को रात-दिन छुपा कर या खुल्लम-खुल्ला ख़र्च करते हैं, उन के लिये उन के रब के पास बदला है, न उन्हें कोई डर है और न कोई ग़म।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿274﴾

[1] इस से मुराद वह मुहाजिर हैं जो मक्का से मदीना आये और अल्लाह की राह में आने की वजह से उनकी हर चीज छूट गयी, इस परिधि (ज़ुमरा) में दीन की तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थी और आलिम (धार्मिक शिक्षक) भी आते हैं।

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبٰوا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوٓا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَأَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ۚ فَمَنْ جَآءَهُ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهِ فَانْتَهٰى فَلَهُ مَا سَلَفَ ۖ وَأَمْرُهُ إِلَى اللّٰهِ ۖ وَمَنْ عَادَ فَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿275﴾

२७५. ब्याज खाने वाले लोग न खड़े होंगे, लेकिन उसी तरह, जिस तरह वह खड़ा होता है, जिसे शैतान लग कर पागल बना देता है।[1] यह इसलिये कि यह कहा करते थे कि तिजारत भी तो ब्याज ही की तरह है,[2] जबकि अल्लाह (तआला) ने तिजारत को हलाल किया और ब्याज को हराम। और जो इंसान अपने पास आयी हुई अल्लाह (तआला) की नसीहत सुन कर रूक गया उस के लिये वह है जो गुजर गया,[3] और उसका मामला अल्लाह (तआला) के पास है और जो फिर (हराम की ओर) पलटा वह जहन्नमी है, वे हमेशा उसी में रहेंगे।

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ﴿276﴾

२७६. अल्लाह (तआला) ब्याज को मिटाता है और दान को बढ़ाता है,[4] और अल्लाह (तआला) किसी नाशुक्रा और काफ़िर को मित्र नहीं बनाता।

إِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿277﴾

२७७. जो लोग ईमान के साथ (सुन्नत के अनुसार) काम करते, नमाज़ों को क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, उनका फल उन के रब के पास है, उन पर न तो कोई डर है और न कोई दुख।

---

[1] ब्याज लेने वाले की यह हालत क़ब्र से उठते वक़्त या क़यामत के मैदान में होगी।

[2] हालांकि तिजारत में तो सामान और पैसे का बराबर लेन देन होता रहता है, दूसरे इस में फ़ायेदा व नुक़सान की उम्मीद रहती है, जबकि ब्याज में यह दोनों बातें नही होती हैं, इसलिए अल्लाह ने बेचने को हलाल और ब्याज को हराम कहा है, फिर यह दोनों एक कैसे हो सकते हैं?

[3] ईमान लाने और माफ़ी मांग लेने के बाद पिछला ब्याज लेने पर पकड़ नहीं होगी।

[4] यह ब्याज के वास्तविक (हक़ीक़ी) और आत्मिक नुक़सान के बाद सदक़ा के फ़ायेदा की तफ़सील है, ब्याज से देखने में तो बढ़ोत्तरी होती है, लेकिन उसके असल मायने के अनुसार परिणामस्वरूप (अंजाम के ऐतबार से) ब्याज का माल उसकी बरबादी और ख़राबी की वजह बनती है, इस बात का समर्थन (ताईद) अब पश्चिमी देशों के अर्थशास्त्री भी करने लगे हैं।

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿278﴾

२७८. हे ईमानवालो! अल्लाह (तआला) से डरो और जो ब्याज बाक़ी रह गया है, वह छोड़ दो अगर तुम सचमुच ईमानवाले हो।

فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَإِن تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿279﴾

२७९. अगर ऐसा नहीं करते तो अल्लाह (तआला) और उस के रसूल से लड़ने के लिये तैयार हो जाओ।[1] और अगर माफ़ी माँग लो तो तुम्हारा असल माल तुम्हारा ही है न तुम ज़ुल्म करो और न तुम पर ज़ुल्म किया जाये।[2]

وَإِن كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَن تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿280﴾

२८०. और अगर कोई ग़रीब हो तो उसे सहूलत तक वक़्त देना चाहिये, और सदक़ा कर दो तो तुम्हारे लिये ज़्यादा अच्छा है, अगर तुम में इल्म हो।

وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ۖ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿281﴾

२८१. और उस दिन से डरो, जिस में तुम सब (अल्लाह तआला) की तरफ़ लौटाये जाओगे और हर इंसान को उस के अमल के ऐतबार से पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा।[3]

---

[1] यह ऐसी कड़ी चेतावनी (तंबीह) है जो किसी दूसरे गुनाह के करने पर नहीं आई है, इसलिये हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने कहा कि जो इंसान इस्लामी मुल्क में ब्याज छोड़ने के लिये तैयार न हो तो वक़्त के राज्य प्रमुख (हाकिम) की ज़िम्मेदारी है कि उससे तौबा कराये (क्योंकि वह अल्लाह और रसूल से जंग का एलान कर रहा है) और न रूकने की हालत में उसकी गर्दन मार दे। (इब्ने कसीर)

[2] तुम अगर असल माल से ज़्यादा माल वसूल करोगे, तो यह तुम्हारा ज़ुल्म होगा और अगर तुम्हें असल माल न दिया जाये तो यह तुम पर ज़ुल्म होगा।

[3] कुछ क़ौल के ऐतबार से यह नबी करीम ﷺ पर नाज़िल आख़िरी आयत (श्लोक) है जिस के बाद ही आप का इंतिक़ाल हो गया।

يَآاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى
اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ؕ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ
كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۪ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ
كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ
عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ
شَيْئًا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ
ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ
وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ
رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ
مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا
فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ
اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْئَمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا اَوْ
كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ
لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً
حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ

२८२. हे ईमानवालो! जब तुम आपस में मुकर्रर मुद्दत के लिए एक-दूसरे से उधार का लेन-देन करो तो लिख लिया करो और लेखक को चाहिये कि आपस का मामला इंसाफ़ के साथ लिखे, लेखक (लिखने वाले) को चाहिये कि लिखने से इंकार न करे, जैसे अल्लाह (तआला) ने उसे सिखाया है उसी तरह उसे भी लिख देना चाहिये और जिस के ज़िम्मे हक़ हो वह लिखवाये और अपने अल्लाह (तआला) से डरे जो उसका रब है, और हुक़ूक़ में से कुछ घटाये नहीं, हाँ जिस इंसान पर हुक़ूक़ हो और वह जाहिल हो या कमज़ोर हो या लिखवाने की ताक़त न रखता हो तो उसका वली इंसाफ़ के साथ लिखवा दे और अपने में से दो मर्दों को गवाह रख लो, अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें जिन्हें तुम गवाह के तौर पर पसन्द कर लो, ताकि एक की भूल-चूक को दूसरी याद दिला दे।[1] और गवाहों को चाहिये कि वे जब बुलाये जायें तो इंकार न करें, और क़र्ज़ को जिसकी मुद्दत मुक़र्रर है चाहे छोटा हो या बड़ा हो लिखने में सुस्ती न करो, अल्लाह तआला के क़रीब यह बात बहुत इंसाफ़ वाली है, और गवाही को ठीक रखने वाली और शक से भी ज़्यादा बचाने वाली है।[2] और

---

[1] यह एक मर्द के सामने दो औरतों को मुक़र्रर करने की फ़ज़ीलत और अक़्लमंदी है, या औरत अक़्ल और याद रखने में मर्द से कमज़ोर है। (जैसाकि सहीह मुस्लिम की एक हदीस में औरत को कम अक़्ल कहा गया है) यह औरत के हुक़ूक़ का हनन और बेइज़्ज़ती का सुबूत नहीं है, (जैसाकि कुछ लोग कहते हैं) बल्कि उनकी फ़ितरी कमज़ोरी का बयान है जो अल्लाह तआला के इल्म और मर्ज़ी पर मबनी है। घमंड की वजह से कोई इसको क़ुबूल न करे तो और बात है, लेकिन हक़ीक़त और घटनाओं के आधार पर इसका खण्डन नहीं किया जा सकता।

[2] लिखने का फ़ायेदा है कि इससे इंसाफ़ की माँग पूरी होगी, गवाही भी सही होगी (कि गवाह के मौजूद न होने या मौत के बाद उनका लिखा हुआ लेख गवाह बन जायेगा) और किसी तरह के शक से दोनों पक्ष महफ़ूज़ रहेंगे, क्योंकि शक होने की हालत में लेख देख लेने पर शक दूर कर लिया जायेगा।

أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۗ وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ ۚ وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ ۚ وَإِن تَفْعَلُوا فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّهُ ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (282)

यह बात अलग है कि वह मामला नगद तिजारत की शक्ल में हो जो आपस में लेन-देन कर रहे हो तो तुम पर उसके न लिखने में कोई गुनाह नहीं। ख़रीदने बेचने के वक़्त भी गवाह मुक़र्रर कर लिया करो, और (याद रखो) न तो लिखने वाले को नुक़सान पहुँचाया जाये और न गवाहों को[1] और अगर तुम ऐसा करो तो यह तुम्हारी खुली नाफ़रमानी है। अल्लाह (तआला) से डरो, अल्लाह (तआला) तुम्हें नसीहत दे रहा है और अल्लाह (तआला) सब कुछ जानने वाला है।

وَإِن كُنتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهَانٌ مَّقْبُوضَةٌ ۖ فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُم بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ أَمَانَتَهُ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ ۗ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۚ وَمَن يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ قَلْبُهُ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ (283)

२८३. और अगर तुम सफ़र में हो और लिखने वाला न पाओ तो गिरवी अपने पास रख लिया करो, और अगर आपस में एक-दूसरे पर यक़ीन हो, तो जिसे अमानत दी गयी है वह उसे अदा कर दे, और अल्लाह (तआला) से डरता रहे जो उसका रब है[2] और गवाही को न छुपाओ और जो उसे छिपा ले वह मन का पापी है,[3] और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह (तआला) उसे अच्छी तरह जानता है।

---

[1] इनको नुक़सान पहुँचाने से मुराद यह है कि बहुत दूर से उन्हें बुलाया जाये, जिस से उनकी व्यस्तता (मश्ग़ूलियत) में अड़चन और तिजारत में नुक़सान हो या उनको झूठी बात लिखने या उसका गवाह बनने के लिए मजबूर किया जाये।

[2] अगर एक-दूसरे पर भरोसा हो तो बिना गिरवी रखे भी क़र्ज़ का सौदा कर सकते हो। अमानत से मुराद यहाँ क़र्ज़ है, अल्लाह से डरते हुए उसे जायेज़ तरीक़े से अदा कर दो।

[3] गवाही को छिपाना बहुत बड़ा गुनाह है, इसलिये इसकी बहुत बुराई यहाँ क़ुरआन में और हदीस में की गयी है, इसलिये सही गवाही की बड़ी अहमियत भी है। सहीह मुस्लिम की हदीस है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया :

«أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ الشُّهَدَاءِ؟ الَّذِي يَأْتِي بِشَهَادَتِهِ قَبْلَ أَنْ يُسْأَلَهَا»

वह सब से अच्छा गवाह है, जो बिना गवाही की माँग के ख़ुद गवाही के लिये हाज़िर हो जाये। (सहीह मुस्लिम)

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ۗ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿284﴾

२८४. जमीनो आसमान की हर चीज अल्लाह (तआला) के अधिकार में है। तुम्हारे दिलों में जो कुछ है, उसे चाहे जाहिर करो या छुपाओ, अल्लाह (तआला) उसका हिसाब लेगा, फिर जिसे चाहे माफ़ कर दे और जिसे चाहे सजा दे और अल्लाह (तआला) हर चीज पर कुदरत रखता है।

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۗ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۗ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۗ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿285﴾

२८५. रसूल उस चीज पर ईमान लाये जो उसकी तरफ़ अल्लाह (तआला) की तरफ़ से उतारी गयी और मुसलमान भी ईमान लाये। यह सब अल्लाह (तआला) और उसके फ़रिश्ते पर, और उस की किताबों पर, और उस के रसूलों पर ईमान लाये, उस के रसूलों में से किसी के बीच हम फ़र्क नहीं करते, उन्होंने कहा कि हम ने सुना और इताअत की, हम तुझ से माफ़ी चाहते हैं। हे हमारे रब! और हमें तेरी ही तरफ़ लौटना है।

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۗ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاغْفِرْ لَنَا ۗ وَارْحَمْنَا ۗ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿286﴾

२८६. अल्लाह किसी भी आत्मा (नफ़्स) पर उस की ताक़त से ज्यादा बोझ नहीं डालता, जो सवाब वह करे वह उस के लिए है और जो बुराई वह करे वह उसी पर है। हे हमारे रब! अगर हम भूल गये हों या गलती की हो तो हमें न पकड़ना। हे हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हम से पहले लोगों पर डाला था। हे हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हमारी ताक़त में न हो और हमें माफ़ कर दे, और हमें माफ़ी अता कर, और हम पर रहम कर, तू ही हमारा मालिक है, हमें काफ़िर क़ौम पर फ़त्ह अता कर।

सूरतु आले इमरान-३

سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ

सूरः आले इमरान मदीना में उतरी[1] इस में दो सौ आयतें है और वीस रूकुऊ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो वड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ॰लाम॰मीम

الٓمّٓ ⓵

२. अल्लाह (तआला) वह है जिसके सिवाय कोई मावूद नहीं, जो ज़िन्दा है और सभी का रक्षक है।[2]

اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ⓶

३. जिसने हक़ के साथ इस किताव (पाक क़ुरआन) को उतारा, जो अपने से पहले के (धर्मशास्त्रों) को प्रमाणित करती है, और उसी ने [इस से पहले (धर्मग्रन्थ)] तौरात और इंजील उतारा।

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ⓷

४. इससे पहले लोगों की हिदायत के लिए और क़ुरआन भी उसी ने उतारा।[3] जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों से कुफ्र करते हैं उनके लिये सख़्त अज़ाव हैं। और अल्लाह (तआला)

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۥ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ⓸

---

[1] यह सूरः मदनी है। इसकी सभी आयतें मुख़्तलिफ अवक़ात में मदीने में ही उतरी और इसका शुरूआती हिस्सा यानी ८३ आयतों तक इसाईयों के नजरान के वफ़द (यह नगर अव सऊदी अरव में है) के वारे में उतरा हुआ है, जो ९ हिजरी में नवी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ था, ईसाईयों ने आकर नवी करीम ﷺ से अपने ईसाई अक़ीदा और इस्लाम के वारे में वहस मुबाहिसा किया, जिसकी तरदीद करते हुए उन्हें मुवाहिला (एक तरीक़ा है, जिसके अनुसार क़सम खाकर अपनी वात कही जाती है) की दावत भी दी गई, जिसका तफ़सीली वयान आगे आयेगा, उसी पृष्ठभूमि में क़ुरआन करीम की इन आयतों का अध्ययन किया जायेगा।

[2] حي और قيوم अल्लाह तआला के वहुत ख़ास नाम है, हई का मतलव है कि वह शुरू से है और आख़िर तक रहेगा, उसे मौत और फ़ना नहीं। क़य्यूम का मतलव वह सारी मख़लूक़ को क़ायम रखने वाला, रक्षक और संरक्षक (निगराँ) है, सारी दुनिया को उसकी ज़रूरत है उसे किसी की ज़रूरत नहीं।

[3] यानी अपने-अपने वक़्त में तौरात और इंजील भी ज़रूर लोगों की हिदायत का चश्मा थीं, इसलिये कि उन के उतारने का मक़सद ही यही था फिर भी उस के वाद وأنزل الفرقان कह कर वाज़ेह कर दिया कि तौरात और इंजील का ज़माना ख़त्म हो गया। अव क़ुरआन उतर चुका वह फ़ुरक़ान है और अव सिर्फ़ वही सच व झूठ की पहचान है, इसको सच माने विना अल्लाह के क़रीव कोई मुसलमान और मोमिन नहीं।

जबरदस्त है और बदला लेने वाला है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ⑤

५. बेशक अल्लाह (तआला) से जमीन और आसमान की कोई चीज छिपी नहीं है।

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑥

६. वही माता के गर्भ में तुम्हारी शक्ल जिस तरह चाहता है बनाता है उस के सिवाय कोई भी हक़ीक़त में इबादत के लायक़ नहीं है, वह ताक़त वाला और हिक्मत वाला है।

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۖ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ ۗ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ⑦

७. वही अल्लाह (तआला) है जिस ने तुझ पर किताब उतारी, जिस में वाजेह और ठोस आयतें हैं, जो असल किताब हैं और कुछ समान (मुतशाबिह) आयतें हैं,[1] फिर जिन के दिलों में खराबी है तो वह मुतशाबिह आयतों के पीछे लग जाते हैं, फ़ितना तलाश करने के लिये और उनकी तावील के लिये, लेकिन उन के मक़सद हक़ीक़ी को अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई नहीं जानता।[2] और कामिल व मज़बूत इल्म वाले यही कहते हैं कि हम तो उन पर ईमान ला चुके यह सब हमारे रब की तरफ़ से है, और नसीहत तो सिर्फ़ अक़्लमंद ही हासिल करते हैं।

[1] 'मुहकमात' से मतलब वह आयतें हैं जिन में अम्र व नहयी (आदेश-निदेश), समस्यायें (मसायेल) और कथायें हैं, जिनका मतलब वाजेह और अटल है, उनके समझने में किसी तरह की कठिनाई नहीं आती। इस के ख़िलाफ़ "आयात मुताशाबिहात" है। जैसे अल्लाह का वुजूद और तक़दीर की समस्यायें, जन्नत, जहन्नम और मलायेका आदि (वग़ैरह)।

[2] तावील का एक मतलब है किसी चीज के असल का इल्म। इस मायने के ऐतबार से إلا الله पर रूकना ज़रूरी है, क्योंकि हर विषय की असल हक़ीक़त का इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को है, दूसरा मतलब किसी विषय की व्याख्या, तफ़सीर, बयान और स्पष्टीकरण (वज़ाहत) है, इस मायने के ऐतबार से والراسخون पर रुका जा सकता है, क्योंकि आलिम लोग भी सहीह तफ़सीर और बयान का इल्म रखते हैं। (इब्ने कसीर)

८. हे हमारे रब! हमें हिदायत देने के बाद हमारे दिल टेढ़े न कर दे और हमें अपने पास से रहमत अता कर, बेशक तू ही सब से बड़ा दाता है।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ﴿8﴾

९. हे हमारे रब ! तू बेशक लोगों को एक दिन जमा करने वाला है, जिस के आने में कोई शक नहीं, बेशक अल्लाह (तआला) वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता।

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿9﴾

१०. काफ़िरों को उन के माल और उन की औलाद अल्लाह (तआला) के अज़ाबों से छुड़ाने में कुछ काम न आ सकेगी, यह तो जहन्नम का ईंधन ही हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ﴿10﴾

११. जैसाकि फ़िरऔन की औलाद का हाल हुआ और उन का जो उन से पहले थे, उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया, फिर अल्लाह (तआला) ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ लिया और अल्लाह (तआला) सख़्त सजा देने वाला है।

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿11﴾

१२. काफ़िरों से कह दीजिये कि तुम लोग निकट भविष्य (मुस्तक़बिल क़रीब) में पराजित किये जाओगे। और जहन्नम की तरफ़ जमा किये जाओगे और वह बुरा बिछौना है।

قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿12﴾

१३. बेशक तुम्हारे लिये (इबरत की) निशानी थी, उन दो गुटों में जो गुथ गये थे, एक गुट अल्लाह की राह में लड रहा था, और दूसरा गुट काफ़िरों का था, वह उन्हें आंखों से अपने से दुगना देखते थे, और अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपनी मदद से मजबूत कर देता है। बेशक इस में आंखों वालों के लिये बड़ी नसीहत है।

قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُم مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ۚ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهِ مَن يَشَاءُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿13﴾

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٤﴾

१४. पसंदीदा चीजों की मुहब्बत लोगों के लिये मुज़य्यन कर दी गई है, जैसे स्त्रियाँ और पुत्र, सोना, चाँदी के जमा किये हुए ख़जाने और निशानदार घोड़े और चौपाये और खेती।[1] यह दुनियावी ज़िन्दगी का सामान है, और लौटने का अच्छा ठिकाना तो अल्लाह (तआला) ही के पास है।

قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿15﴾

१५. आप कह दीजिये कि क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर चीज बताऊँ? अल्लाह से डरने वाले लोगों के लिये उन के रब के पास जन्नत हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में वे हमेशा रहेंगे,[2] और पकीजा बीवियाँ[3] और अल्लाह (तआला) की ख़ुशी है और सभी बन्दे अल्लाह (तआला) की निगाह में हैं।

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿16﴾

१६. जो कहते हैं कि हे हमारे रब! हम ईमान ला चुके, इसलिये हमारे गुनाह माफ़ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿17﴾

१७. जो सब्र करने वाले, और सच्चे और फ़रमाँबर्दार और अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने वाले हैं और पिछली रात को (मोक्ष प्राप्त

---

[1] شَهَوَات से यहाँ मुराद مُشْتَهَيَات है, यानी वह चीजें जो इंसान को प्राकृतिक रूप (फ़ितरी तौर) से पसंद हैं, इसलिये इन से लगाव और उन से मुहब्बत नाजायेज नहीं है, लेकिन यह मुहब्बत मज़हबे इस्लाम के क़ानून की परिधि (दायरे) में और संतुलित (मुतवाज़िन) हो, उनकी ख़ूबसूरती भी अल्लाह तआला की तरफ़ से इम्तेहान है।

﴿إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ﴾

"हम ने ज़मीन पर जो कुछ बनाया है इसे ज़मीन की ख़ूबसूरती के लिये बनाया है, ताकि लोगों का हम इम्तेहान लें।" (अल-कहफ़-७)

[2] इस आयत में ईमानवालों को बताया जा रहा है कि दुनिया की ऊपर बयान की गई चीज़ों में ही न खो जाना, बल्कि उनसे बेहतर तो वह ज़िंदगी और उसकी रहमत है जो रब के पास है, जिस के हक़दार अल्लाह के डर से डरने वाले हैं, इसलिये अल्लाह से डरो, अगर यह तुम्हारे अन्दर पैदा हो गया तो बिला शक दुनिया और आख़िरत की सारी भलाईयाँ अपने दामन में बटोर लोगे।

[3] पाक का मतलब है कि वह दुनियावी गंदगी और मैल-कुचैल, माहवारी और दूसरी गंदगी से पाक होंगी और पाक दामन होंगी, इसलिये अगली दो आयतों में अल्लाह के डर से डरने वालों की फ़ज़ीलतों का बयान है।

करने की कामना के लिये) इस्तिगफ़ार करने वाले हैं।

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿18﴾

१८. अल्लाह उस के फ़रिश्तों और आलिमों ने गवाही दी है कि अल्लाह के सिवाय कोई मावूद नहीं, वह इन्साफ़ को क़ायम रखने वाला है, वही ज़वरदस्त हिक्मत वाला है, उस के सिवाय कोई इवादत के लायक़ नहीं।

اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۗ وَ مَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَ مَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿19﴾

१९. वेशक अल्लाह के पास दीन इस्लाम ही है[1] (अल्लाह के लिए मुकम्मल सिपुर्दगी) और जो किताव दिये गये उन्होंने इल्म आने के वाद आपस में हसद की वजह से इख़्तिलाफ़ किया, और जो अल्लाह की आयतों (पाक क़ुरआन) को न माने तो अल्लाह जल्द ही हिसाव लेगा।

---

[1] इस्लाम वही दीन है जिसकी तवलीग और तालीम हर नवी अपने दौर में देते रहे और अव यह उसकी मुकम्मल शक्ल है जिसे आख़िरी रसूल मोहम्मद ﷺ दुनिया के सामने पेश कर रहे हैं। जिस में एकेश्वरवाद (तौहीद), रिसालत और आख़िरत के लिए इस तरह यक़ीन रखना है जैसे आप ﷺ ने वताया है, अव सिर्फ़ यह यक़ीन रख लेना कि अल्लाह (परमेश्वर) एक है या कुछ अच्छा काम कर लेना इस्लाम नहीं न इससे आख़िरत में नजात हासिल होगी, अक़ीदा और दीन यह है कि अल्लाह को एक माना जाये, सिर्फ़ उसी एक अल्लाह की इवादत की जाये, मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ समेत सभी रसूलों के लिए यक़ीन रखा जाये और आप ﷺ पर रिसालत का ख़ातमा माना जाये और उम्मीद के साथ वह यक़ीन और अमल किये जायें जो क़ुरआन और रसूलों के कौल (हदीस) में वयान है अव इस दीन इस्लाम के सिवाय कोई दूसरा दीन अल्लाह के यहाँ क़ुवूल न होगा।

﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾

"और जो इंसान इस्लाम के सिवाय किसी दूसरे दीन की खोज करे उसका दीन क़ुवूल नहीं होगा और आख़िरत में वह नुक़सान उठाने वालों में होगा।" (आले इमरान : ८५)

﴿قُلْ يَاأَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللّٰهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾

"कह दीजिये कि हे लोगो! मैं तुम सवकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ।" (सूर: आराफ़-१५८)

﴿تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا﴾

"शुभ है वह जिस ने अपने वन्दे पर फ़ुरक़ान (विवेकारी शास्त्र) उतारा ताकि वह दुनिया को ख़वरदार करे।" (अल-फ़ुरक़ान-१)

आप ﷺ ने फ़रमाया : उस अल्लाह की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है जो यहूदी या इसाई मुझ पर यक़ीन किये विना मर जाये वह जहन्नमी है। (सहीह मुस्लिम) यह भी कहा कि मैं लाल-काले (सभी इंसान) के लिये भेजा गया हूँ इसीलिए आप ने अपने दौर के सभी राजाओं को ख़त लिखकर उनको इस्लाम दीन क़ुवूल करने की दावत दी। (सहीहैन, माध्यम इव्ने कसीर)

२०. अगर वह आप से झगड़ा करें तो आप कह दें कि मैंने और मेरे पैरोकारों ने ख़ुद को अल्लाह के लिए समर्पित कर दिया और आप अहले किताब और अनपढ़ लोगों[1] को कहें कि क्या तुम इस्लाम लाये। अगर वह इस्लाम को क़ुबूल कर लें तो सीधा रास्ता पा गये और अगर मुंह फेरें तो आप को सिर्फ़ पहुँचाना है और अल्लाह बन्दों को देख रहा है।

فَإِنْ حَآجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۗ وَقُل لِّلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأُمِّيِّينَ أَأَسْلَمْتُمْ ۚ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوا ۖ وَّإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿20﴾

२१. बेशक जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों से कुफ़्र करते हैं, और ईशदूतों (अम्बिया) को नाजायज़ क़त्ल करते हैं और जो लोग इंसाफ़ की बात करें, उन्हें भी क़त्ल करते हैं तो (हे नबी) आप उन्हें बड़े अज़ाब में बाख़बर कर दीजिये।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿21﴾

२२. उन्हीं के (पुण्य) काम दुनिया और आख़िरत में बेकार हो गये और इनका कोई सहायक (मददगार) नहीं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿22﴾

२३. क्या आपने उन्हें नहीं देखा, जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया है, वह अपने आपस के फ़ैसले के लिये अल्लाह (तआला) की किताब की तरफ़ बुलाये जाते हैं, फिर भी उनका एक गिरोह मुंह फेर कर लौट जाता है।[2]

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿23﴾

२४. इसकी वजह उन का यह कहना है कि उन्हें गिनती के कुछ दिन ही आग स्पर्श (छू) करेगी, यह उनकी मनगढ़न्त बातों ने उन्हें उन के दीन के बारे में धोखे में डाल रखा है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۖ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿24﴾

[1] अनपढ़ लोगों से मुराद अरब के मूर्तिपूजक हैं जो किताब वालों के मुक़ाबले में आम तौर पर जाहिल थे।

[2] इन किताब वालों से मुराद वह मदीने के रहने वाले यहूदी हैं जिनका बहुमत दीन इस्लाम क़ुबूल करने लायक ही नहीं थे, और इस्लाम मुसलमानों और नबी ﷺ के ख़िलाफ़ मसायेल पैदा करने में मशग़ूल रहे, यहाँ तक कि उन के दो गिरोहों को देश निकाला और एक गिरोह को क़त्ल कर दिया गया।

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿25﴾

२५. फिर क्या हालत होगी जब उन्हें हम उस दिन जमा करेंगे, जिस के आने में कोई शक नहीं, और हर इंसान को अपने किये का पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर जुल्म न किया जायेगा।

قُلِ اللَّهُمَّ مَٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن تَشَاءُ وَتَنزِعُ الْمُلْكَ مِمَّن تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ ۖ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿26﴾

२६. आप कह दीजिए, ऐ अल्लाह, हे सारी दुनिया के मालिक! तू जिसे चाहे मुल्क दे और जिस से चाहे मुल्क छीन ले और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील कर दे, तेरे ही हाथों में सारी भलाईयाँ हैं।[1] बेशक तू हर चीज पर क़ुदरत रखता है।

تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۖ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۖ وَتَرْزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿27﴾

२७. तू ही रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है,[2] तू ही निर्जीव से जीव पैदा करता है,[3] और ज़िन्दा से बेजान निकालता है, तू ही है कि जिसे चाहता है अनगिनत रोज़ी अता करता है।

---

[1] इस आयत में अल्लाह की बेपनाह क़ुदरत और ताक़त का बयान है, राजा को रंक और रंक को राजा बना देने का हक़ उसी को है الخيربيدك की जगह पर بِيَدِكَ الْخَيْرُ (सूचना की प्राथमिकता के साथ) से मुराद फ़ज़ीलत दिखाना है, यानी भलाईयाँ सिर्फ़ तेरे ही हाथ में हैं, तेरे सिवाय कोई भलाई नहीं दे सकता, शर (बुराई) का (ख़ालिक़) भी अगरचे अल्लाह ही है लेकिन यहाँ सिर्फ़ ख़ैर (भलाई) का बयान किया गया। शर (बुराई) का नहीं इसलिये कि भलाई सिर्फ़ अल्लाह की मेहरबानी है, इसके ख़िलाफ़ बुराई इन्सान के अपने अमल का बदला है जो उसे मिलता है या इसलिये कि बुराई भी उसकी तक़दीर के लिखे का एक हिस्सा है, जिसमें भलाई इस तरह है कि अल्लाह के सभी काम भले हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2] रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करने का मतलब मौसम का बदलना है, एक मौसम में रात लम्बी होती है तो दिन छोटा है, और दूसरे मौसम में इसके ख़िलाफ़ दिन लम्बा होता है और रात छोटी हो जाती है, यानी कभी रात का हिस्सा दिन में और दिन का हिस्सा रात में दाख़िल कर देता है, जिस से रात और दिन छोटे बड़े हो जाते हैं।

[3] जैसे वीर्य (बेजान) पहले इंसान से निकलता है और फिर उस निर्जीव (वीर्य) से इंसान, इसी तरह बेजान अण्डे से ज़िन्दा मुर्गी और फिर ज़िन्दा मुर्गी से बेजान अण्डा या काफ़िर से मोमिन और मोमिन से काफ़िर पैदा करता है।

२८. मोमिनों को चाहिए कि ईमानवालों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त न बनायें,[1] और जो ऐसा करेगा वह अल्लाह (तआला) की किसी पक्ष (हिमायत) में नहीं, लेकिन यह कि उनके (डर से) किसी तरह की हिफ़ाज़त का इरादा हो,[2] और अल्लाह (तआला) ख़ुद तुम्हें अपने आप से डरा रहा है और अल्लाह (तआला) ही की तरफ़ लौटकर जाना है।

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِي شَيْءٍ إِلَّآ أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقٰىةً ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۗ وَإِلَى اللّٰهِ الْمَصِيرُ ﴿28﴾

२९. कह दीजिए कि चाहे तुम अपने दिल की बातें छिपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह (तआला) सब को जानता है, आकाशों और धरती में जो कुछ है सब उसे मालूम है, अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

قُلْ إِنْ تُخْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿29﴾

३०. जिस दिन हर एक नफ़्स (व्यक्ति) अपने किये भलाई और बुराई को मौजूद पायेगा, ख़्वाहिश करेगा कि काश! उस के और गुनाह के बीच बहुत दूरी होती। अल्लाह (तआला) अपने आप से डरा रहा है और अल्लाह (तआला) अपने बन्दों पर बहुत मेहरबान है।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۖ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ أَمَدًا ۢ بَعِيدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۗ وَاللّٰهُ رَءُوفٌ ۢ بِالْعِبَادِ ﴿30﴾

३१. कह दीजिए! अगर तुम अल्लाह (तआला) से मुहब्बत करते हो तो मेरी इत्तेबा करो, ख़ुद अल्लाह (तआला) तुम से मुहब्बत करेगा और

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿31﴾

---

[1] औलिया, वली का बहुवचन (जमा) है। वली ऐसे दोस्त को कहते हैं जिस से दिली मुहब्बत और ख़ास रिश्ता हो, जैसे अल्लाह तआला ने अपने आप को ईमानवालों का वली कहा है।

﴿اللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا﴾

"अल्लाह ईमानवालों का वली है।" (अल-बक़र:-२५७)

यानी ईमानवालों को एक-दूसरे से मुहब्बत और ख़ास रिश्ता है और वे आपस में एक-दूसरे के वली (मित्र) हैं।

[2] यह हुक्म उन मुसलमानों के लिए है, जो किसी काफ़िर मुल्क में रहते हों और उन से दोस्ती किये बिना उनके ख़ौफ़ से बचना मुमकिन न हो तो वह उनसे ज़बानी दोस्ती कर सकते हैं।

तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा।[1] और अल्लाह (तआला) बहुत बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿32﴾

३२. कह दीजिये कि अल्लाह (तआला) और रसूल के हुक्म की इताअत करो, अगर वह मुंह फेर लें तो बेशक अल्लाह (तआला) काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता।[2]

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿33﴾

३३. बेशक अल्लाह (तआला) ने सभी लोगों में से आदम को और नूह को और इब्राहीम के परिवार और इमरान के परिवार को चुन लिया।

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِن بَعْضٍ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿34﴾

३४. कि ये सभी आपस में एक-दूसरे के वंश से हैं और अल्लाह (तआला) सुनता और जानता है।

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿35﴾

३५. जब इमरान की बीवी ने कहा कि हे मेरे पालनहार! मेरे गर्भ में जो कुछ भी है उसे तेरे नाम से आज़ाद करने[3] की मन्नत मान ली तो तू इसे क़ुबूल कर, बेशक तू अच्छी तरह से सुनने वाला और जानने वाला है।

---

[1] यानी रसूल अल्लाह ﷺ की इत्तेबा करने की वजह से सिर्फ़ तुम्हारे गुनाह को ही नहीं माफ़ किया जायेगा, बल्कि तुम उसके महबूब बन जाओगे तो यह कितनी अच्छी बात है कि अल्लाह के सामने एक इंसान अल्लाह के प्रेमी की जगह हासिल कर ले।

[2] इस आयत में अल्लाह के हुक्म की इत्तेबा के साथ-साथ रसूल अल्लाह ﷺ की इत्तेबा करने की फिर से पुनर्रावृत्ति (ताकीद) करके यह वाज़ेह किया गया है कि अब बिना मोहम्मद ﷺ की पैरवी किये नजात नहीं हासिल हो सकती और इसका नकारना कुफ़्र है, और ऐसे काफ़िरों को अल्लाह तआला पसन्द नहीं करता, चाहे वह अल्लाह की मुहब्बत और नज़दीक होने के कितने ही दावेदार हों। इस आयत में हदीस के न मानने वालों और रसूल अल्लाह ﷺ की पैरवी न करने वालों की कड़ी आलोचना की गयी है क्योंकि दोनों ही अपने-अपने रूप से ऐसा काम करते हैं जिसे यहाँ कुफ़्र के बराबर बताया गया है।

[3] محررا (तेरे नाम आज़ाद) का मतलब तेरी धर्मस्थली (इबादतगाह) की ख़िदमत के लिये पेश करती हूं।

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَآ أُنثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنثَىٰ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّيٓ أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَٰنِ الرَّجِيمِ ﴿36﴾

३६. जब बच्चे को जन्म दिया तो कहने लगी मेरे रब! मुझे तो लड़की हुई है, अल्लाह (तआला) अच्छी तरह से जानता है कि क्या जन्म दिया है, और लड़का, लड़की की तरह नहीं, मैंने उसका नाम मरियम रखा है, मैं उसे और उसकी औलाद को मरदूद शैतान से तेरी पनाह में देती हूँ ।[1]

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِندَهَا رِزْقًا قَالَ يَٰمَرْيَمُ أَنَّىٰ لَكِ هَٰذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَن يَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿37﴾

३७. उसे उस के रब ने अच्छी तरह से क़ुबूल किया और उसका सब से अच्छा पालन-पोषण कराया, उसका संरक्षक (निगहबान) ज़करिया को बनाया[2] जब कभी ज़करिया उनके कमरे में जाते तो उन के पास रिज़्क रखी हुई पाते थे ।[3] वह पूछते थे कि हे मरियम ! तुम्हारे पास यह रोज़ी (जीविका) कहाँ से आयी? वह जवाब देती कि यह अल्लाह (तआला) के पास से है, बेशक अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अनगिनत रिज़्क अता करे ।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَآءِ ﴿38﴾

३८. उसी जगह पर ज़करिया (عليه السلام) ने अपने पालनहार से दुआ की, कहा कि ऐ मेरे पालनहार! मुझे अपने पास से नेक औलाद अता कर, बेशक तू दुआ सुनने वाला है ।

---

[1] अल्लाह तआला ने यह दुआ क़ुबूल की, जैसाकि सहीह हदीसों में है कि जब बच्चा पैदा होता है तो शैतान उसे छूता है, जिस से वह चीख़ता है, लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत मरियम और उन के बेटे ईसा को इस से महफ़ूज़ रखा है ।

«ما من مولود يولد إلا مسه الشيطان حين يولد فيستهل صارخا من مسه إياه إلا مريم وابنها»

(सहीह बुख़ारी, किताबुल तफ़सीर, मुस्लिम किताबुल फ़ज़ायल)

[2] हज़रत ज़करिया मरियम के मौसा भी थे इसलिए भी, इस के सिवाय अपने समय में पैग़म्बर होने की वजह से सब से अच्छे संरक्षक बन सकते थे जो कि हज़रत मरियम की आर्थिक (मुआशी) ज़रूरतों, शैक्षिक और नैतिक प्रशिक्षण (तरबीयत) का उचित प्रबन्ध कर सकते थे ।

[3] मेहराब से मुराद वह कमरा है जिस में हज़रत मरियम रहा करती थीं, रिज़्क से मुराद फल आदि हैं, यह फल बिना मौसम के हुआ करते थे यानी गर्मी के फल सर्दियों में और सर्दियों के फल गर्मियों में उन के कमरे में होते थे ।

فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿39﴾

३९. फिर फ़रिश्तों ने पुकारा जब कि वह कमरे में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे कि अल्लाह (तआला) तुझे यहिया की यक़ीनी ख़ुशख़बरी देता है।[1] जो अल्लाह (तआला) के कलमे की तसदीक़ करने वाला[2] मुखिया, परहेज़गार और नबी होगा नेक लोगों में से।

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ۭ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿40﴾

४०. कहने लगे हे मेरे रब ! मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा? मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूं और मेरी पत्नी बाँझ है, कहा इसी तरह अल्लाह (तआला) जो चाहे करता है।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ۭ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿41﴾

४१. कहने लगे रब! मेरे लिए इसकी कोई निशानी बना दे, कहा निशानी यह है कि तीन दिन तक तू लोगों से बात न कर सकेगा, सिर्फ़ इशारे से समझायेगा, तू अपने रब का ज़िक्र ज़्यादा कर और सुबह व शाम उसी की बड़ाई को ब्यान कर।

وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿42﴾

४२. और जब फ़रिश्तों ने कहा हे मरियम! अल्लाह (तआला) ने तुझे मुंतख़ब कर लिया और तुझे पाक कर दिया, और सारी दुनिया की औरतों में तेरा चुनाव (इंतिख़ाब) कर लिया।[3]

---

[1] बिना मौसम के फल देखकर हज़रत ज़करिया के दिल में (अपने बुढ़ापे और अपनी बीवी के बाँझ होने पर भी) यह उम्मीद पैदा हुई कि काश अल्लाह तआला उन्हें भी इसी तरह औलाद अता कर दे, इसी वजह से उनके हाथ दुआ के लिये उठ गये, जिसे अल्लाह तआला ने क़ुबूल भी कर लिया और अता भी किया।

[2] अल्लाह के कलमें की तसदीक़ से मुराद हज़रत ईसा की तसदीक़ करेगा, यानी हज़रत यहिया हज़रत ईसा से बड़े हुए, दोनों आपस में मौसेरे भाई थे, दोनों ने एक-दूसरे का अनुमोदन किया, سيدا का मतलब है सरदार, حصورا का मतलब है पाप से विशुद्ध यानी गुनाह के क़रीब न गये हों, इसका मतलब यह कि उनको गुनाह से रोक दिया गया हो यानी हसूर, महसूर के मतलब में लिया गया है, कुछ ने इसका मतलब नामर्द किया है, लेकिन यह ठीक नहीं है, क्योंकि यह एक ऐब है, जबकि यहाँ उनकी फ़ज़ीलत, इज़्ज़त के तौर पर इस्तेमाल हुआ है।

[3] हज़रत मरियम की यह इज़्ज़त और मान उनकी अपनी फ़ज़ीलत और उनके दौर के एतबार से है, क्योंकि सहीह हदीसों में हज़रत मरियम के साथ हज़रत ख़दीजा को भी خيرنسائها (सभी औरतों में बेहतर) कहा गया है और कुछ हदीसों में चार औरतों को मुकम्मल कहा गया है। हज़रत मरियम, हज़रत आसिया (फ़िरऔन की बीवी), हज़रत ख़दीजा, हज़रत आयेशा और

४३. हे मरियम ! तू अपने रब के हुक्मों का पालन और सज्दा कर और झुकने वालों (रूकुअ करने वालों) के साथ झुका कर (रूकुअ कर)।

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿43﴾

४४. यह ग़ैब की ख़बरों में से है, जिसे हम आप को वह्यी कर रहे हैं, तब आप उस वक़्त उन के पास न थे जब वह अपने क़लम डाल रहे थे कि उन में से मरियम की परवरिश कौन करेगा? और न आप उन के झगड़ों के वक़्त उन के पास थे ।[1]

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿44﴾

४५. जब फ़रिश्तों ने कहा हे मरियम! तुझे अल्लाह (तआला) अपने एक कलिमा[2] की ख़ुशख़बरी देता है कि जिसका नाम मसीह ईसा इब्ने मरियम है जो दुनिया और आख़िरत में सम्मानित है और वह मेरे निकटवर्तियों (मुक़र्रबीन) में से है।

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۙ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿45﴾

४६. वह लोगों से पालने में बात करेगा और अधेड़ उम्र में भी,[3] और वह नेकों में से होगा।

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿46﴾

हज़रत आयेशा के बारे में कहा गया है कि उनकी फ़ज़ीलत औरतों में वैसे ही है, जैसे सरीद (हलुवा या खीर) को सभी खानों में फ़ज़ीलत है। (इब्ने कसीर) और तिर्मिज़ी में हज़रत फ़ातिमा पुत्री मोहम्मद ﷺ को भी अच्छी औरतों में शामिल किया गया है। (इब्ने कसीर) इसका यह भी मतलब हो सकता है कि ऊपर बयान की गई औरतों को दूसरी औरतों में फ़ज़ीलत और बड़ाई अता की गयी है कि वे अपने-अपने दौर में फ़ज़ीलत रखती हैं।

[1] आजकल अहले बिदअत ने नबी करीम ﷺ की मान-मर्यादा में अतिश्योक्ति (गुलू) करते हुए उन्हें अल्लाह तआला की तरह ग़ैब का आलिम और सर्वव्यापी (हाज़िर व नाज़िर) मानने का अक़ीदा गढ़ लिया है। इस आयत में इन दोनों बातों का स्पष्ट खण्डन (तरदीद) हो रहा है, अगर आप ﷺ को ग़ैब का इल्म होता तो अल्लाह तआला यह न फ़रमाता कि हम ग़ैब की ख़बरें आप को दे रहे हैं क्योंकि जिसको पहले ही से यह इल्म हो उससे ऐसे नहीं कहा जाता।

[2] हज़रत ईसा को कलमा या अल्लाह का कलमा इसलिये कहा गया है कि उनकी पैदाइश एक चमत्कारिक रूप से आम इन्सानी उसूल के ख़िलाफ़ बिना बाप के अल्लाह की विशेष सामर्थ्य (क़ुदरत) और उस के कथन كُنْ (हो जा) की उत्पत्ति है।

[3] हज़रत ईसा के (पालने) माँ की गोद में बातचीत करने का बयान ख़ुद क़ुरआन करीम की सूरः मरियम में है, इस के सिवाय सहीह हदीस में दो दूसरे बच्चों के माँ की गोद में बात करने का बयान है, एक साहबे जुरैज और एक इस्राईली स्त्री का बच्चा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया)

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿47﴾

४७. कहने लगी, "मेरे रब! मुझे लड़का कैसे होगा? हालांकि मुझे किसी मर्द ने छुआ भी नहीं है।" फ़रिश्ते ने कहा, "इसी तरह अल्लाह (तआला) जो चाहे पैदा करता है, जब कभी वह किसी काम को करना चाहता है तो सिर्फ़ कह देता है "हो जा" तो वह हो जाता है।"

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿48﴾

४८. और अल्लाह (तआला) उसे लिखना और हिक्मत और तौरात व इंजील सिखायेगा।

وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ بُيُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿49﴾

४९. और वह इस्राईल की औलाद का रसूल होगा कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानी लाया हूँ, मैं तुम्हारे लिए पक्षी के रूप के ही तरह का मिट्टी की चिड़िया बनाता हूँ, फिर उस में फूंक मारता हूँ तो वह अल्लाह (तआला) के हुक्म से पक्षी बन जाता है और मैं अल्लाह (तआला) के हुक्म से पैदाईशी अंधे को और कोढ़ी को अच्छा कर देता हूँ और मुर्दों को जिन्दा कर देता हूँ और जो कुछ तुम खाओ और जो कुछ भी तुम अपनें घरों में जमा करो मैं तुम्हें बता देता हूँ, इस में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है अगर तुम ईमानवाले हो।

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۟ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿50﴾

५०. और मैं तौरात की तसदीक़ करने वाला हूँ जो मेरे सामने है, और मैं इसलिये आया हूँ कि तुम पर कुछ उन चीज़ों को हलाल करूँ जो तुम पर हराम कर दी गयी है,[1] और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानी लाया हूँ, इसलिये तुम अल्लाह (तआला) से डरो और मेरी ही पैरवी करो।

اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿51﴾

५१. यक़ीन करो! मेरा और तुम्हारा रब अल्लाह ही है, तुम सब उसी की इबादत करो, यही सीधी राह है।

[1] इस से मुराद या तो वह चीज़ें हैं, जो अल्लाह तआला ने सज़ा के तौर पर उन पर हराम कर दी थी या फिर वह चीज़ें जो उनके आलिमों ने ख़ुद अपने ऊपर हराम कर ली थी, अल्लाह का हुक्म नहीं था। (क़ुर्तबी) या ऐसी चीज़ भी हो सकती है जो उनके आलिमों ने अपने सोच-विचार से हराम कर रखी थीं और सोंच-विचार में उन से ग़लती हुई और हज़रत ईसा ने इन ग़ल्तियों को दूर करके उन्हें हलाल कर दिया। (इब्ने कसीर)

فَلَمَّآ أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنصَارِيٓ إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ آمَنَّا بِاللَّهِ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ (52)

५२. लेकिन जब (हज़रत) ईसा (عليه السلام) ने उनका इंकार महसूस कर लिया तो कहने लगे अल्लाह (तआला) की राह में मेरी मदद करने वाला कौन-कौन है? हवारियों ने जवाब दिया कि हम अल्लाह (तआला) की राह में सहायक हैं,[1] हम अल्लाह (तआला) पर ईमान लाये और आप गवाह रहिये कि हम मुसलमान हैं।

رَبَّنَآ آمَنَّا بِمَآ أَنزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ (53)

५३. हे हमारे रब ! हम तेरी उतारी हुई वह्यी पर ईमान लाये और हम ने तेरे रसूल की इत्तेबा किया, बस अब तू हमें गवाहों में लिख ले।

وَمَكَرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ (54)

५४. और काफ़िरों ने चाल चली और अल्लाह (तआला) ने भी योजना बनायी और अल्लाह (तआला) सभी योजनाकारों से अच्छा है।[2]

إِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَىٰ إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ (55)

५५.जब अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया हे ईसा! मैं तुझे पूरी तरह से लेने वाला हूँ,[3] और तुझे अपनी तरफ़ उठाने वाला हूँ और तुझे काफ़िरों से पाक करने वाला हूँ, तरफ़ तुम्हारे पैरोकारों को काफ़िरों से क़यामत के दिन तक ऊपर रखने वाला हूँ, फिर तुम सब को लौटना मेरी ही तरफ़ है, मैं ही तुम्हारे बीच सभी इख़्तिलाफ़ों का फ़ैसला करूँगा।

---

[1] हवारियों, हवारी का बहुवचन (जमा) है जिसका मतलब है أنصار (अन्सार) सहायक। जिस तरह नबी ﷺ का क़ौल है। "إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا وَحَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ" "हर नबी का कोई ख़ास सहायक होता है और मेरा सहायक ज़ुबैर है।" (सहीह बुख़ारी)

[2] مكر (मक्र) अरबी भाषा में बारीक और गुप्त (छिपे) उपाय को कहते हैं और इसी मतलब में यहाँ अल्लाह को خير الماكرين कहा गया है, मानो यह तरीक़ा बुरा भी हो सकता अच्छा भी, अगर बुरे प्रयोजन (मक़सद) के लिये हो तो बुरा अच्छे मक़सद के लिये हो तो अच्छा है।

[3] التوفي यह توفي से बना जिसका धातु (मसदर) وفي है इसका असल मायने पूरी तरह से लेना है, इंसान की मौत पर 'वफ़ात' लफ़्ज़ इसलिये बोला जाता है, कि उसके शरीरिक अधिकार (हक़) पूरी तरह से छीन लिये जाते हैं, इसलिए इस शब्दार्थ के कई शक्लों में से मौत सिर्फ़ एक शक्ल है। नींद में भी साम्यिक रूप (वक़्ती तौर) से मानवी अधिकार (इंसानी हुक़ूक़) निलम्बित कर दिये जाते हैं, इस वजह से नींद के लिये भी पाक क़ुरआन ने 'वफ़ात' के लफ़्ज़ का इस्तेमाल किया है, जिस से मालूम हुआ कि कि इसका असल मायने पूरी तरह से लेना ही हैं। إني متوفيك यहाँ अपने असल मायने में इस्तेमाल हुआ है, यानी हे ईसा! मैं तुझे यहूदियों, इसाईयों से बचाकर पूरी तरह से अपनी तरफ़ आकाश पर उठा लूँगा, और ऐसा ही हुआ।

५६. फिर काफ़िरों को तो मैं इस दुनिया और आख़िरत में सख़्त अज़ाब दूंगा और उनका कोई मददगार न होगा।

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿56﴾

५७. लेकिन ईमानवालों और नेक काम करने वालों को अल्लाह (तआला) उनका पूरा-पूरा बदला देगा और अल्लाह तआला ज़ालिमों से मुहब्बत नहीं करता।

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿57﴾

५८. यह जिसे हम तेरे ऊपर पढ़ रहे हैं आयतें हैं और दृढ़ उपदेश (हिक्मत वाली नसीहत) है।

ذَٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿58﴾

५९. अल्लाह (तआला) के पास ईसा की मिसाल आदम की तरह है, जिसे मिट्टी से पैदा करके कह दिया कि हो जा, बस वह हो गया।

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿59﴾

६०. तेरे रब की ओर से हक़ यही है, ख़बरदार! शक करने वालों में से न होना।

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿60﴾

६१. इसलिए जो भी आप के पास इस इल्म के आ जाने के बाद भी आप से इस में झगड़े तो आप कह दीजिए कि आओ हम तुम अपने-अपने बेटों को और हम तुम अपनी बीवियों को और हम और तुम अपने आप को बुला लें फिर हम मिल कर दुआ करें और झूठों पर अल्लाह की फिटकार (लानत) भेजें।[1]

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ﴿61﴾

६२. बेशक सिर्फ़ यही सच्चा बयान है और अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई दूसरा इबादत के लायक़ नहीं, और बेशक अल्लाह ताक़तवर और हिक्मत वाला है।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿62﴾

[1] यह मोबाहला की आयत कहलाती है, मोबाहला का मतलब है दो गिरोह का एक-दूसरे पर लानत यानी बद्दुआ देना, मतलब यह है कि जब दो गिरोहों में किसी बारे में झगड़ा और इख़्तिलाफ़ हो जाये और बहस व मुबाहसा से उसका ख़ात्मा होता न दिखाई दे तो दोनों अल्लाह से यह दुआ करें कि हम में जो झूठा हो उस पर लानत हो।

६३. फिर भी अगर वे क़ुबूल न करें तो अल्लाह (तआला) भी अच्छी तरह विद्रोहियों (फ़सादियों) को जानने वाला है।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿63﴾

६४. आप कह दीजिए कि हे अहले किताब! ऐसी इन्साफ़ वाली बात की ओर आओ जो हम में तुम में बराबर है कि हम अल्लाह (तआला) के सिवाय किसी की इबादत न करें और न उसके साथ किसी को शामिल करें, न अल्लाह (तआला) को छोड़ कर आपस में एक-दूसरे को रब ही बना लें, अगर वह मुँह मोड़ लें तो कह दो कि गवाह रहना कि हम तो मुसलमान हैं।[1]

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿64﴾

६५. ऐ अहले किताब ! तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो? जबकि तौरात और इंजील तो उन के बाद उतारी गयी, क्या तुम फिर भी नहीं समझते?[2]

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ التَّوْرَاةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿65﴾

६६. सुनो! तुम लोग उस में झगड़ चुके जिसका तुम्हें इल्म था, अब इस में क्यों झगड़ते हो जिस का तुम्हें इल्म ही नहीं है? और अल्लाह (तआला) जानता है तुम नहीं जानते।

هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿66﴾

---

[1] सहीह बुख़ारी में है कि क़ुरआन करीम के इस हुक्म से आप ﷺ ने हिरक़ल बादशाह रोम को ख़त भेजा, उस में इस आयत के हवाले से दीन इस्लाम क़ुबूल करने की दावत दी और उसे कहा कि तू मुसलमान हो जायेगा तो दुगुना सवाब मिलेगा, वर्ना तेरी पूरी रियाआ का भी गुनाह तेरे सिर पर होगा।

[2] हज़रत इब्राहीम के बारे में झगड़े का मतलब है कि यहूदी और इसाई दोनों यह दावा करते थे कि हज़रत इब्राहीम उनके दीन के मानने वाले थे, अगरचे तौरात जिस पर यहूदी यक़ीन करते हैं और इंजील जिसे इसाई पाक किताब मानते हैं, दोनों हज़रत इब्राहीम के सैकड़ों साल बाद उतरी, फिर हज़रत इब्राहीम यहूदी या इसाई किस तरह हो सकते थे? कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा के बीच एक हज़ार साल की मुद्दत का फ़र्क़ है और हज़रत मूसा और हज़रत ईसा के बीच दो हज़ार साल का फ़र्क़ था। (क़ुर्तबी)

مَا كَانَ إِبْرٰهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلٰكِن كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿67﴾

६७. इब्राहीम न तो यहूदी थे न इसाई, वल्कि वह पूरी तरह से सिर्फ़ मुसलमान थे,[1] वह मूर्तिपूजक भी न थे।

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرٰهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ﴿68﴾

६८. सब लोगों से ज़्यादा इब्राहीम के क़रीब वह लोग हैं जिन्होंने उनका कहना माना और यह नबी और जो लोग ईमान लाये, ईमानवालों का वली और मददगार अल्लाह है।

وَدَّت طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّونَكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿69﴾

६९. अहले किताब का एक गुट चाहता है कि तुम्हें भटका दे, हक़ीक़त में वे ख़ुद अपने आप को भटका रहे हैं और समझते नहीं।[2]

يٰأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيٰتِ اللَّهِ وَأَنتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿70﴾

७०. ऐ अहले किताब ! तुम ख़ुद गवाह होने के बावजूद भी अल्लाह की आयतों को क्यों नहीं मानते।

يٰأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ بِالْبٰطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿71﴾

७१. ऐ अहले किताब! जानने के बावजूद भी सच और झूठ को क्यों मिला रहे हो और सच्चाई को क्यों छिपा रहे हो?

وَقَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ آمِنُوا بِالَّذِي أُنزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوا آخِرَهُ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿72﴾

७२. और अहले किताब के एक गुट ने कहा कि जो कुछ भी ईमानवालों पर उतारा गया है उस पर दिन चढ़े तो ईमान लाओ और शाम के वक़्त इंकार कर दो ताकि यह लोग भी पलट जायें।

وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا لِمَن تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَى اللَّهِ أَن يُؤْتَىٰ أَحَدٌ مِّثْلَ مَا أُوتِيتُمْ أَوْ يُحَاجُّوكُمْ عِندَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿73﴾

७३. और सिवाय तुम्हारे दीन पर चलने वालों के और किसी पर यक़ीन न करो, आप कह दीजिए! बेशक हिदायत तो अल्लाह ही की हिदायत है। (और यह भी कहते हैं कि इस बात पर भी यक़ीन न करो) कि कोई उस जैसा दिया जाये जैसा तुम दिये गये हो, या यह कि यह तुम

---

[1] حنيفا مسلما (ख़ालिस मुसलमान) यानी शिर्क से नफ़रत करने वाला और सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करने वाला।

[2] यह यहूदियों के हसद और जलन की वजाहत है जो वह ईमानवालों से रखते थे और इसी हसद की वजह से मुसलमानों को भटकाने की कोशिश करते थे, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इस तरह वह ख़ुद ही अन्जाने में अपने आप को भटका रहे हैं।

से तुम्हारे रब के पास झगड़ा करेंगे, आप कह दीजिए कि फ़ज़्ल तो अल्लाह (तआला) के हाथ में है, वह जिसे चाहे उसे अता करे, अल्लाह (तआला) बहुत बड़ा और जानने वाला है।

يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿74﴾

७४. वह अपनी रहमत से जिसे चाहे ख़ास कर ले, और अल्लाह (तआला) फ़ज़्ल वाला और बहुत बड़ा है।

وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِى الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿75﴾

७५. और कुछ अहले किताब ऐसे भी हैं कि तू ख़ज़ाने का अमानतदार उन्हें बना दे तो भी तुझे वापस कर दें, और उन में कुछ ऐसे भी हैं कि अगर तू उन्हें एक दीनार भी अमानत के तौर पर दे तो तुझे अदा न करें, हां! यह और बात है कि तू उन के सिर पर ही खड़ा रहे, यह इसलिए कि उन्होंने कह रखा है कि हम पर इन अनपढ़ों के हक़ का कोई गुनाह नहीं, यह लोग जानने के बावजूद भी अल्लाह पर झूठ बोलते हैं।

بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿76﴾

७६. क्यों नहीं (पकड़ होगी) लेकिन जो इंसान अपना वादा पूरा करे और अल्लाह तआला से डरे, तो अल्लाह तआला भी ऐसे डरने वालों को अपना दोस्त रखता है।[1]

اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۠ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿77﴾

७७. बेशक जो अल्लाह (तआला) के वादे और अपनी क़समों को थोड़ी सी क़ीमत पर बेच डालते हैं, उन के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है, अल्लाह (तआला) न तो उन से बातचीत करेगा, न क़ियामत के दिन उनकी ओर देखेगा, न उन्हें पाक करेगा और उन के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।

---

1 "वादा पूरा करे।" का मतलब है वह वादा पूरा करे जो अहले किताब से या हर नबी के वास्ते से उनकी उम्मतों से नबी ﷺ पर ईमान लाने के बारे में लिया गया है। "और अल्लाह से डरे" अल्लाह तआला के ज़रिये रोके गये कामों से रूके और उन बातों के अनुसार कर्म (अमल) करें जो नबी ﷺ बयान करें, ऐसे लोग बेशक अल्लाह की पकड़ से बचे रहेंगे, बल्कि अल्लाह के प्यारे होंगे।

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوُنَ أَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُولُونَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿78﴾

७८. अवश्य उन में ऐसा गिरोह भी है जो किताब पढ़ते हुए अपनी ज़बान मरोड़ लेता है, ताकि तुम उसे किताब ही का लेख समझो, हालांकि हक़ीक़त में वह किताब में से नहीं और यह कहते भी हैं कि वह अल्लाह (तआला) की तरफ़ से हैं, हालांकि हक़ीक़त में वह अल्लाह तआला की तरफ़ से नहीं, वह तो जान बूझ कर अल्लाह (तआला) पर झूठ बोलते हैं ।[1]

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِي مِنْ دُونِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُونُوا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ﴿79﴾

७९. किसी ऐसे इंसान को जिसे अल्लाह (तआला) किताब, हिक्मत और नबूअत अता करे, यह जायेज़ नहीं कि फिर भी लोगों से कहे कि अल्लाह (तआला) को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ बल्कि वह तो कहेगा कि तुम सब लोग रब के हो जाओ,[2] तुम्हें किताब सिखाने और तुम को पढ़ाने की वजह से ।

---

[1] यह उन यहूदियों का बयान है जिन्होंने अल्लाह की किताब (तौरात) में न केवल बदलाव किया बल्कि दो गुनाह और किये, एक तो ज़बान को मरोड़कर किताब के लफ़्ज़ों को पढ़ते, जिस से जनता को हक़ीक़त के ख़िलाफ़ असर देने में वह सफल हो जाते, दूसरे अपनी मन-गढ़न्त बातों को अल्लाह की बातें कहते, दुर्भाग्य (बदक़िस्मती) से मुसलमानों के धार्मिक अगवाओं (पेशवाओं) में भी, नबी ﷺ की भविष्यवाणी (पेशीनगोई) " لَتَتَّبِعُنَّ سُنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ " (तुम अपने से पहली उम्मतों की क़दम-क़दम पर पैरवी करोगे) के हिसाब से ऐसे बहुत से लोग हैं जो दुनियावी स्वार्थ (ग़र्ज़) या गिरोही तअस्सुब या इख़्तिलाफ़े राय की वजह से क़ुरआन करीम के साथ भी यही सुलूक करते हैं । पढ़ते क़ुरआन की आयत हैं और विषय ख़ुद गढ़ते हैं, जनता समझती है कि मोलवी साहब ने मसले का हल क़ुरआन से निकाला है, हक़ीक़त में इस हल का क़ुरआन से कोई वास्ता नहीं होता या आयत के अर्थों में बदलाव या बनावट से काम लिया जाता है ताकि साबित किया जा सके कि यह अल्लाह की तरफ़ से है ।

[2] यह इसाईयों के बारे में कहा जा रहा है कि उन्होंने हज़रत ईसा को माबूद बना दिया है, अगरचे वह एक इंसान थे जिन्हें किताब, हिक्मत और नबूअत से नवाज़ा गया था, और ऐसा कोई इंसान यह दावा नहीं कर सकता कि अल्लाह को छोड़कर मेरे पुजारी और भक्त बन जाओ, बल्कि वह यह कहता है कि अल्लाह वाले बन जाओ ।

८०. और वह तुम्हें यह हुक्म नहीं देगा कि फ़रिश्तों (स्वर्गदूतों) और नबियों (ईशदूतों) को माबूद बना लो, क्या फ़रमाबर्दार होने के बाद तुम्हें नाफ़रमान बन जाने का हुक्म देगा।

وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلَٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيِّـۧنَ أَرْبَابًا ۗ أَيَأْمُرُكُم بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿80﴾

८१. और जब अल्लाह (तआला) ने नबियों से वायेदा लिया कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब और हिक्मत दूँ, फिर तुम्हारे पास वह रसूल आये जो तुम्हारे पास की चीज़ को सच बताये तो तुम्हारे लिए उस पर ईमान लाना और उसकी मदद करना ज़रूरी है। फ़रमाया कि तुम क्या इस को क़ुबूल करते हो और उस पर मेरा ज़िम्मा ले रहे हो सब ने कहा हमें क़ुबूल है, फ़रमाया तो गवाह रहो और मैं ख़ुद भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ।

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَٰقَ النَّبِيِّـۧنَ لَمَآ ءَاتَيْتُكُم مِّن كِتَٰبٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِۦ وَلَتَنصُرُنَّهُۥ ۚ قَالَ ءَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِى ۖ قَالُوٓا أَقْرَرْنَا ۚ قَالَ فَاشْهَدُوا وَأَنَا۠ مَعَكُم مِّنَ الشَّٰهِدِينَ ﴿81﴾

८२. अब इस के बाद भी जो पलट जाये, वह ज़रूर नाफ़रमान है।[1]

فَمَن تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْفَٰسِقُونَ ﴿82﴾

८३. क्या वह अल्लाह (तआला) के दीन के सिवाय किसी दूसरे दीन की खोज में हैं? जब कि सभी आसमानों वाले और ज़मीन वाले अल्लाह (तआला) के फ़रमाँबरदार हैं, ख़ुशी से हों तो और नाख़ुशी से हों तो,[2] सभी को उसकी तरफ़ लौटाया जायेगा।

أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُۥٓ أَسْلَمَ مَن فِى السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿83﴾

[1] यह अहले किताब (यहूदी और इसाई) और दूसरे धर्म वालों को तंबीह है कि मोहम्मद ﷺ के आ जाने के बाद भी उन पर ईमान लाने के बजाये अपने-अपने दीन का पालन करना इस वादा के ख़िलाफ़ है, जो अल्लाह तआला ने हर नबी के ज़रिये हर उम्मत (समुदायों) से लिया है और इस वादा को तोड़ देना अधर्म है, फ़िसक़ यहाँ कुफ़्र के मतलब में है क्योंकि नबूअते मोहम्मदी (ﷺ) से इंकार केवल फ़िसक़ नही कुफ़्र है।

[2] जब ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ अल्लाह तआला की क़ुदरत और ताक़त से बाहर नहीं है, चाहे ख़ुशी से या नाख़ुशी से, तो तुम उस के सामने सिर झुकाने (या इस्लाम क़ुबूल करने से) कहाँ भाग रहे हो? अगली आयत में ईमान लाने का तरीक़ा बताकर फिर कहा जा रहा है कि हर नबी को हर आसमान से उतरी किताब पर बिना किसी इख़्तिलाफ़ के ईमान लाना ज़रूरी है, फिर कहा जा रहा है कि इस्लाम दीन के सिवाय दूसरा दीन क़ुबूल नहीं होगा। किसी दूसरे दीन के पैरोकारों की तक़दीर में सिर्फ़ नुक़सान के और कुछ न होगा।

८४. आप कह दीजिए कि हम अल्लाह (तआला) पर और जो कुछ हम पर उतारा गया है और जो इब्राहीम (ﷺ) और इस्माईल (ﷺ) और याकूब (ﷺ) और उनकी संतान (औलाद) पर उतारा गया, और जो कुछ मूसा (ﷺ) और ईसा (ﷺ) और दूसरे नबियों को अल्लाह (तआला) की तरफ़ से अता किये गये उन सब पर ईमान लाये ।[1] हम उन में से किसी के बीच फ़र्क नहीं करते और हम अल्लाह (तआला) के फ़रमांबर्दार हैं ।

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۪ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿84﴾

८५. और जो (इंसान) इस्लाम के सिवाय किसी दूसरे दीन की खोज करे उसका दीन क़ुबूल नहीं होगा और वह आख़िरत में घाटा उठाने वालों में होगा ।

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿85﴾

८६. अल्लाह (तआला) किस तरह से उन लोगों को हिदायत देगा जो अपने ईमान लाने, रसूल की सच्चाई जानने की गवाही देने और अपने पास वाज़ेह निशानी आ जाने के बाद भी काफ़िर हो जायें । अल्लाह (तआला) ऐसे ज़ालिमों को सीधी राह नहीं दिखाता ।

كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿86﴾

८७. उन की सज़ा यह है कि उन पर अल्लाह की लानत है और फ़रिश्तों की और सब लोगों की ।

اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُھُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿87﴾

[1] मतलब सभी नबियों पर ईमान लाना कि वह अपने-अपने वक़्त में अल्लाह की तरफ़ से भेजे गये थे, और उन पर जो किताबें और सहीफ़े उतारे गये, उनके बारे में यह यक़ीन रखना कि वह आसमानी किताबें थीं, जो हक़ीक़त में अल्लाह की तरफ़ से उतारी हुई थीं ज़रूरी है, लेकिन अब पैरवी सिर्फ़ क़ुरआन के हुक्म के ऐतबार से होगी, क्योंकि क़ुरआन ने पिछली किताबों को मंसूख़ कर दिया है ।

८८. वह उस में हमेशा रहेंगे न उन से सज़ा हल्की की जायेगी और न छूट दिया जायेगा।	خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿88﴾
८९. लेकिन जो लोग इस के बाद तौबा और सुधार कर लें तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।[1]	اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۫ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿89﴾
९०. बेशक जो लोग अपने ईमान (विश्वास) के बाद कुफ़्र (अविश्वास) करें फिर कुफ़्र में बढ़ जायें[2] उनकी तौबा कभी भी क़ुबूल न की जायेगी[3] और यही गुमराह हैं।	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿90﴾
९१. बेशक जो लोग काफ़िर हों और मरते वक़्त तक काफ़िर रहें, उन में से अगर कोई ज़मीन भर सोना दे, अगरचे (यद्यपि) फ़िदिया में हो तो भी कभी भी क़ुबूल न होगा, इन्हीं के लिए सख़्त अज़ाब है और उनका कोई मददगार नहीं।	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ۭ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿91﴾

[1] अन्सार में से एक मुसलमान धर्मभ्रष्ट (मुर्तद्द) हो गया और मूर्तिपूजकों से जा मिला, लेकिन जल्द ही उसे पछतावा हुआ और उस ने लोगों के ज़रिये रसूल अल्लाह ﷺ तक ख़बर भिजवायी कि (هل لي من توبة) (क्या मेरी तौबा क़ुबूल हो सकती है) उस पर यह आयत उतरी। इस से मालूम हुआ कि मुर्तद्द की सज़ा जबकि सख़्त है, क्योंकि उस ने हक़ को पहचान लेने के बाद हसद, जलन और सरकशी से सच्चाई से मुंह फेरा और इंकार किया, लेकिन अगर कोई साफ़ दिल से माफ़ी मांगे और अपना सुधार कर ले तो अल्लाह तआला माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है, उसकी तौबा क़ुबूल है।

[2] इस आयत में उनकी सज़ा का बयान हो रहा है, जो मुर्तद्द होने के बाद माफ़ी न मांगे और इंकार की हालत में मर जाये।

[3] इस से वह माफ़ी का मतलब है जो मौत के वक़्त मांगी जाये, बल्कि माफ़ी का दरवाज़ा हर इंसान के लिए हर वक़्त खुला हुआ है।